एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 03 (मई-जून, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

रजनीगंधा की वैज्ञानिक खेती

(*डॉ. कल्पना यादव)
राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर
* kalpi2099@gmail.com

रजनीगंधा का फूल अपनी मनमोहक सुगंध अधिक समय तक ताजा रहने तथा रहने तथा परिवहन क्षमता के कारण बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसकी मांग भी बाजार में बढ़ी है। इसके फूलो का उपयोग मुख्य रूप से गुलदस्ता, माला, एवं गजरा बनाने में प्रयोग किया जाता है। मूल्यवान सुगन्धित तेल होने की वजह से इसकी खेती वैज्ञानिक तरीके से बड़े पैमाने पर की जा रही हैं। लबे समय तक सुगन्धित तथा ताजा बने रहने के कारण रजनीगंधा के खुले फूलो और कर्तन फूलो का पुष्पविन्यास बनाने, माला बनाने, फूलदान में रखने, तथा सजाने में बहुतायत से उपयोग होता हैं। इसके फूल से अच्छी और सुगन्धित किस्म के 0.08 से 0.135% तेल भी प्राप्त होता हैं जिसका उपयोग इत्र या परफ्यूम बनाने में किया जाता हैं जो की दूसरे इत्र या परफ्यूम से महँगे होते हैं। इसी कारण से बाजार में इसकी माँग ज्यादा रहती हैं।

उत्पति

रजनीगंधा (*पोलोएंथस ट्यूबरोज* लिन) की उत्पति मेक्सिको देश में हुई हैं | यह फूल एमरिलिडएसी कुल का पौधा है। भारतीय जलवायु में अच्छी वृदि के साथ फूल खिलने के कारण वेस्ट बंगाल, कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र , उतर प्रदेश इत्यादि जगहों पर इसकी खेती सफलतापूर्ण होती हैं। भारत में इस फूल की खेती करीबन 20000 हैक्टर में हो रही हैं। फ्रांस, इटली, अफ्रीका, अमेरिका इत्यादि देश में नहीं इसकी खेती सफलतापूर्ण हो रही हैं।

रंजनीगंधा के पौधे 60 से 120 सेंटी मीटर लम्बे होते हैं जिनमे 6 से 9 पत्तियां जिनकी लम्बाई 30-45 सेंटी मीटर और चौड़ाई 1.3 सेंटी मीटर होती हैं। पत्तियां चमकली हरी होती हैं तथा पत्ति के नीचे लाल लाल बिंदिया होती हैं। फूल लाउड स्पीकर के चोंगे के आकार के एकहरे, तथा दोहरे सफेद रंग के होते हैं।

किस्में

एकहरी किस्में:- इस किस्म में पंखुड़ियाँ एक ही कतार में होती हैं। किस्म हैं - रजत रेखा, श्री नगर सुभाषिनी प्रज्वल मेक्सिकन सिंगल दोहरी क़िस्मे

दोहरी किस्में :- इस किस्म में पंखुड़ियाँ 3 से 5 कतार में होती हैं। किस्म हैं - कलकत्ता डवल, स्वर्ण रेखा , पर्ल।

मिट्टी और जलवायु

अच्छे वायुसंचार एवं जल निकास युक्त 6.5 से 7.5 पी. एच. मान वाली, दोमट और बलुई दोमट मिट्टी रजनीगंधा के खेती के लिए उपयुक्त होती है। अच्छी वृद्धि एवं फूल के लिए उपजाऊ, कार्बनिक खाद एवं नमीं युक्त जमीन अच्छी मानी जाती हैं। गमले में रजनीगंधा लगाने के लिए बगीचे की मिट्टी, गोबर

की खाद और पत्ती की खाद के मिश्रण 2:1:1 का प्रयोग करना चाहियें | रजनीगंधा एक शीतोष्ण जलवायु का पौधा है, किन्तु यह पुरे वर्ष माध्यम जलवायु में उगाया जा सकता हैं| भारत में समशीतोष्ण जलवायु में गर्म और आद्र जगहों पर अच्छी वृदि होती हैं | 20 से 35 0 सेंटी ग्रेड तापमान रजनीगंधा के विकास और वृद्धि के लिए उपयुक्त होता हैं । हल्के धूप युक्त खुली जगहों में अच्छी प्रकार से उगाया जा सकता हैं। छायादार स्थान इसके लिए उपयुक्त नहीं होता हैं|

प्रसारण

(1) बल्ब: व्यापारिक स्तर पर राइजोम द्वारा ही प्रसारण किया जाता हैं। 2 से 2.5 सेंटी मी. लम्बे और 1.5 सेंटी मी. अधिक मोटे कन्द उपयोग में लाना चाहियें ।

(2) विभाजन : जब बल्ब गुच्छे में हो जाते हैं तो इसको अलग अलग कर फफूंद नाशक दवा से उपचारित कर जड़ निकलने तथा अंकुरण के लिए बालू में लगा दिया जाता हैं।

(3) सूक्ष्म प्रसारण :- तने के भागो का "एम एस माधयम" में ऊतक संवर्धन द्वारा तैयार किया जाता है।

(4) बीज:- उपयुक्त जलवायु में एकहरी क़िस्मो में ही बीज बनाने की प्रक्रिया पाई जाती हैं। भूमि तापमान सेंटी ग्रेड पर अंकुरण अच्छा होता हैं। अंकुरित पौधे को मुख्या रूप से खेत में लगा सकते हैं। बेड़ में कतार से कतार की 10 सैमी दुरी रखकर 1.5 से 2 सेंटीमीटर की दुरी पर बोना चाहियें ।

खेत की तैयारी

दो तीन बार खेत की जुताई कर 6-8 टन गोबर की खाद प्रति एकड़ की दर से मिलानी चाहियें । खेत की तैयारी ऐसी होनी चाहियें की मिट्टीयाँ भुरभुरी हो जाएँ। खेत में खरपतवार तथा पुरानी फसल के अवशेष को निकाल कर अपनी आवश्यकत्ता अनुसार क्यारियाँ बनानी चाहियें, जिससे की सिंचाई की व्यवस्था अच्छी हो सके|

बल्ब लगाने का समय

भारत में रजनीगंधा को मैदानी भाग में फरवरी- मार्च तथा पहाड़ी इलाको में अप्रैल -मई में लगाया जाता हैं। मार्च से जून में लगाए गए पौधे में लम्बे और अच्छे फूल खिलते हैं| 20 X 20 सेंटी मी की दूरी पर पौधे को लगाने से अच्छी पैदावार ली जा सकती है।

खाद एवं उर्वरक

खाद एवं उर्वरक की जरूरत जलवायु एवं मिट्टी पर निर्भर करता हैं। अच्छे फूल उत्पादन के लिए प्रति एकड़ 6 से 8 टन गोबर की खाद , 200 से 225 किलो यूरिया , 500 किलो सिंगल सुपर फॉस्फेट तथा 130 किलो म्यूरेट ऑफ़ पोटाश देना चाहियें । यूरिया को दो भागो में खेत में देना चाहियें |

खरपतवार नियंत्रण

खरपतवार रजनीगंधा खेती के लिए बहत बड़ी समस्या है। पौधा लगाने के पहले खेत में डाइयूरोंन 1.12 किलो प्रति एकड़ या एट्राजिन 1.2 किलो प्रति एकड़ की दर के देने से करपतवार कम निकलते हैं |

रोग एवं कीट

1) **तना सड़न**: स्क्लेरोसियम रॉल्फ़सी फफूंद से होने वाला मिट्टी जनित रोग हैं। पतियों पे हरे रंग का दाग होकर सड़ने लगता हैं। इस रोग की रोकथान के लिए पुराणी सड़ी हुई पतियों को खेत के बाहर निकल देते हैं तथा कॉपर ऑक्सीक्लोरिड दवा 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल कर पोधो के पास जड़ो में देना चाहियें |

(2) **कली सड़न**: यह रोग इरबीनी स्पेसिडा के फफूंद के कारण होता है तथा इस रोग में कलियां भूरी होकर सूखने तथा सड़ने लगती हैं। स्ट्रेप्टोसाईक्लीन दवा का 500 मि. ग्राम प्रति ली. पानी में घोल कर छड़काव करना चाहियें।

(3) **ट्यूबरोज माइल्ड मोजेक वायरस**: यह वायरस रोग लगने पर पौधा नष्ट हो जाता है। रोग मुक्त बल्ब या ऊतक संवर्धित पौधे का उपयोग करना चाहियें।

(4) **ग्रास हॉपर**: यह कीट पत्तियां तथा फूल को खाकर नुकसान पहुँचाता हैं। इसकी रोकथाम के लिए मेलाथिओंन या रोगर 2 मि. ली./ ली. पानी में घोल के 15 दिनों पर छिड़काव करना चाहियें |

(5) **विविल** :- यह कीट रात में पौधे की पतियों को किनारे से खाकर नुकसान पहुँचाता हैं। इसकी सुन्डिया जड़ तथा बल्व को छेद कर नुकसान पहुँचाती हैं। रोकथाम के लिए क्लोरोपायरीफॉस दवा 5 मि. ली./ ली. पानी में घोल के जडोँ के आस पास देना चाहियें |

(6) **माहु और थ्रिप्स** :- यह कीट पतियों , फूलो, एवं डंठल का रस चूस कर उसे भद्दा बनाते हैं। इसकी रोकथाम के लिए मोनोक्रोतोफॉस दवा 1.5 मि. ली./ ली. पानी में घोल के 15 दिनों पर छिड़काव करना चाहियें |

(7 रेड स्पाइडर माइट: इस कीट के प्रकोप से पाटिया पीली , चाँदी जैसी जिससे पौधे मर जाते हैं। इसकी रोकथाम के लिए डाईको फॉल दवा 2.5 मि. ली./ ली. पानी में घोल के 15 दिनों पर छिड़काव करना चाहियें |

(8 निमेटोड :- यह कीट जड़ो एवं कंदो को खाकर नुकसान पहुँचता हैं। जिससे पौधे मर जाते हैं। इसकी रोकथाम के लिए कार्बोफ्यूरोन दवा का 500 -600 मि. ली./ ली. प्रति एकड़ से छिड़काव करना चाहियें |

फूलो को तोडना

फूलो को तभी तोडना चाहिए जब वो पूर्ण रूप से खिल जाते हैं। फूलो को काटने का अच्छा समय प्रात काल या शाम होता हैं। काटने के बाद फूलो को पानी में डालकर रखना चाहिए।

फूल उत्पादन

अच्छी खेती से 80 से 120 क्वींटल खुले फूल का उत्पादन होता हैं। यह उत्पादन किस्मो पर निर्भर करता हैं। रजनीगंधा को कर्तन फूलो के लिए लम्बे समय तक संरक्षित और ताजा बनाये रखने क लिए स्पाइक को 4% सुक्रोज़ एवं 200 मि. ग्राम. 8 हाइड्रोक्यूनोलाइन सल्फेट के घोल में रखा जाता हैं।